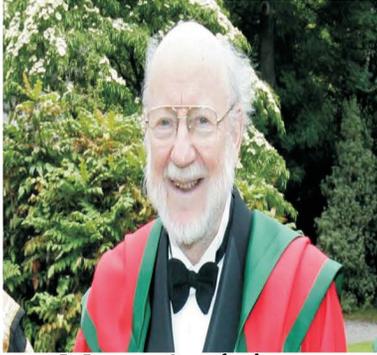


नोबेल पुरस्कार विजेता विद्वान-वर्ष 2015

दिव्यांश श्रीवास्तव
छात्र, ला मार्टीनियर कॉलेज, लखनऊ-226001, उ०प्र०, भारत
divyansh_21@hotmail.com

1. चिकित्सा के क्षेत्र में



विलियम सी० कैंपबेल
(जन्म-1930, आयरलैण्ड)



सतोशी ओमुरा
(जन्म-1935, जापान)



यूयू तु
(जन्म-1930, चीन)

वर्ष 2015 में चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडेमी ऑफ साइंस द्वारा आयरलैण्ड के जैवरसायन वैज्ञानिक विलियम सी० कैंपबेल, जापान के जैवरसायन विज्ञानी सतोशी ओमुरा तथा चीन की चिकित्सा विज्ञानी एवं रसायनज्ञ यूयू तु, को मलेरिया और फाईलेरिया जैसी परजीवी(पैरासाइटिक) बीमारियों की असरदार नई दवाएं खोजने के लिए संयुक्त रूप से चुना गया है। विलियम सी० कैंपबेल और सतोशी ओमुरा को उनके उल्लेखनीय कार्य "फॉर देयर डिस्कवरीज कन्सर्निंग ए नॉवेल थेरेपी अगेंस्ट इंफेक्शंस कॉज्ड बाई राउंडवॉर्म पैरासाइट" तथा यूयू तु को उनके उल्लेखनीय कार्य "फॉर देयर डिस्कवरीज कन्सर्निंग ए नॉवेल थेरेपी अगेंस्ट इंफेक्शंस कॉज्ड बाई राउंडवॉर्म पैरासाइट" के आधार पर नोबेल पुरस्कार हेतु चुना गया। विलियम सी० कैंपबेल और सतोशी ओमुरा ने राउंड वॉर्म पैरासाइट से होने वाले संक्रमण के इलाज की नई दवा एवरमेक्टिन की खोज की। इससे रिवर ब्लाइंडनेस और लिम्फैटिक फिलॉरियासिस(फाईलेरिया) के मरीजों की संख्या में बहुत कमी आई है। इसके अतिरिक्त यह अन्य परजीवी संक्रमणों से ग्रसित मरीज के इलाज में भी कारगर है। यूयू तु ने मलेरिया की नई दवा आर्टेमाइसिनिन एवं डाईहाइड्रोआर्टेमाइसिन की खोज की। क्लोरोक्विन और कुनैन के नाकाम होने के बाद यह दवा मच्छर के काटने से होने वाली बीमारी से लड़ने में अत्यन्त मददगार सिद्ध हुई है। उनके द्वारा पारंपरिक चीनी हर्बल औषधि से यह दवा तैयार की गई है जिसके कारण दुनिया भर में मलेरिया से होने वाली मृत्यु दर में महत्वपूर्ण गिरावट दर्ज की गई है। यूयू तु को नोबेल पुरस्कार की सम्पूर्ण राशि(80 लाख स्वीडिश क्रोनर या 9.60 लाख डॉलर या लगभग 6.26 करोड़ रुपये) की आधी राशि तथा शेष आधी राशि विलियम सी० कैंपबेल और सतोशी ओमुरा में बराबर-बराबर बांटी जायेगी। वर्तमान में विलियम सी० कैंपबेल ड्रियु विश्वविद्यालय में रिसर्च फ़ैलो एमेरिटस, सतोशी ओमुरा कितासातो विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एमेरिटस तथा वेस्लेयान विश्वविद्यालय में रसायन के मैक्स टिस्लर प्रोफेसर, यूयू तु चाइना एकेडेमी ऑफ ट्रेडिशनल चाइनीज मेडिसिन में प्रोफेसर हैं।

2. भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में



तकाकी काजिता
(जन्म-1959, जापान)



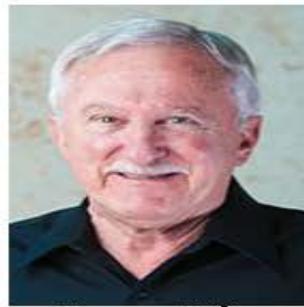
आर्थर बी० मैकडोनाल्ड
(जन्म-1943, कनाडा)

वर्ष 2015 में भौतिक विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा टोकियो विश्वविद्यालय, काशीवा, जापान, के भौतिक शास्त्री एवं इंस्टीट्यूट फॉर कॉस्मिक रे रिसर्च के निदेशक, प्रोफेसर तकाकी काजिता तथा क्वींस विश्वविद्यालय, किंग्स्टन, कनाडा, में एमेरिटस प्रोफेसर आर्थर बी० मैकडोनाल्ड को संयुक्त रूप से प्रदान किया जायेगा। इन भौतिक शास्त्रियों को वर्ष 2015 में उनके द्वारा "फॉर द डिस्कवरी ऑफ न्यूट्रिनो ऑसिलेशंस, क्विच शोज दैट न्यूट्रिनोन्स हैव मास" पर किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार हेतु चुना गया। इनकी खोज से यह बात सिद्ध हो सकी है कि सूक्ष्म कणों में भी द्रव्यमान होते हैं जिससे ब्रह्माण्ड को देखने के हमारे नजरिये में भी परिवर्तन आ जायेगा। नोबेल पुरस्कार राशि को इन दोनों वैज्ञानिकों के बीच बराबर-बराबर बांटा जायेगा।

3. रसायन विज्ञान के क्षेत्र में



टॉमस रॉबर्ट लिंडाल



पॉल एल० मॉडरिक



अजीज सैंकर

वर्ष 2015 में रसायन विज्ञान में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा कैंसर अनुसंधान में विशेषज्ञ स्वीडिश वैज्ञानिक टॉमस रॉबर्ट लिंडाल, ड्यूक विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ मेडिसिन, डरहम, एन.सी., यू०एस०ए०, में जैवरसायन वैज्ञानिक एवं जेम्स बी. ड्यूक प्रोफेसर पॉल मॉडरिक, तथा तुर्की में जन्मे व यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलिना, चैपल हिल, एन.सी., यू०एस०ए०, के जैवरसायन शास्त्री, अजीज सैंकर को संयुक्त रूप से उनके उल्लेखनीय कार्य "फॉर मिडेनिरिटिक स्टडीज ऑफ डी.एन.ए. रिपेयर"(डी.एन.ए. की मरम्मत के यत्रवत अध्ययन के लिए) को आधार बनाकर प्रदान किया जायेगा। इन वैज्ञानिकों के अध्ययन से इस बात का पता चला कि कैंसर जैसी परिस्थितियों में स्थिति किस प्रकार खराब हो सकती है? किस तरह जीवित कोशिकाएं कार्य करती हैं? कोशिकाएं किस प्रकार क्षतिग्रस्त डी.एन.ए. की मरम्मत करती हैं? बहुत सी आनुवंशिक बीमारियों का कारण क्या है? कैंसर कोशिकाओं के विकास और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया क्या है? टॉमस रॉबर्ट लिंडाल ने इस इंजाइम की खोज की, जो कोशिकाओं की खराबी को ठीक करता है। पॉल मॉडरिक ने डी.एन.ए. को ठीक करने की इस जटिल प्रक्रिया का पता लगाया, जिसे बेनेल मरम्मत कहा जाता है। अजीज सैंकर ने इस प्रक्रिया का पता लगाया, जिससे कोशिकाएं पराबैंगनी किरणों से होने वाले नुकसान को ठीक करती हैं। नोबेल पुरस्कार राशि को इन तीनों वैज्ञानिकों के बीच बराबर-बराबर बांटा जायेगा।

4. साहित्य के क्षेत्र में



स्वैत्लाना अलेक्सांद्रोव्ना एलेक्सिएविच(जन्म-1948, इयानो-फ्रन्कीव्स, यूक्रेन)

वर्ष 2015 में साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंस द्वारा यूक्रेन में जन्मी 67 वर्षीय बेलारूस की महिला लेखिका एवं पत्रकार स्वैत्लाना अलेक्सांद्रोव्ना एलेक्सिएविच को उनके उल्लेखनीय कार्य "a monument to suffering and courage in our time" के आधार पर प्रदान किया जायेगा। वह साहित्य का नोबेल पुरस्कार जीतने

वाली दुनिया की 14वीं महिला हैं। स्वीडिश एकेडेमी द्वारा स्वेतलाना के लेखन को अपने समय की पीड़ा और साहस की निशानी बताया है। उनकी कृतियों को "वॉयसेज ऑफ यूटोपिया" का नाम दिया गया है। इसमें पूर्व सोवियत संघ में लोगों के जीवन के अलावा 1986 के चेर्नोबिल परमाणु हादसे, अफगानिस्तान में रूस की लड़ाई और दूसरे विश्व युद्ध का वर्णन किया गया है। स्वेतलाना शुरुआती दौर में पत्रकार रहीं हैं। वह अब भी उसी तरह ग्राउंड वर्क और शोध करने में विश्वास करती हैं। जैसे— "वॉयसेज ऑफ चेर्नोबिल" लिखने के लिए पहले वे चेर्नोबिल जाकर कुछ महीने रहीं और वहाँ उन पत्रकारों के संपर्क में रहीं जिन्होंने इस त्रासदी को कवर किया था। फिर वे इस दुर्घटना में पीड़ित हुए लोगों, डॉक्टरों, अग्निशमन कर्मचारियों वगैरह 500 लोगों से मिलीं। इसलिए स्वेतलाना को इस किताब को पूरा करने में पूरा दस वर्ष का समय लगा।

5. शांति के क्षेत्र में

वर्ष 2015 में शांति के नोबेल पुरस्कार हेतु नॉर्वेजियन नोबेल एकेडेमी, ओस्लो, नॉर्वे, द्वारा द्यूनीशिया की संस्था नेशनल डायलॉग क्वार्टट को चुना गया। संस्था को यह पुरस्कार द्यूनीशिया में लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिए उसके सराहनीय प्रयासों के चलते दिया गया। नोबेल पुरस्कार समिति के प्रमुख कैसी कुलमैन फाइव के अनुसार "इस संस्था ने द्यूनीशिया में एक ऐसे समय वैकल्पिक और शांतिपूर्ण राजनीतिक प्रक्रिया शुरू की जब वर्ष 2011 की अरब क्रांति के बाद देश गृह युद्ध की कगार पर था।" पुरस्कार समिति ने माना है कि इस वर्ष का पुरस्कार दुनिया भर में लोकतांत्रिक शक्तियों को प्रोत्साहित करने का काम करेगा।

6. अर्थशास्त्र के क्षेत्र में



एंगस डीटॉन(जन्म-1945, एडिनबरा, यूके0)

वर्ष 2015 में, अल्फ्रेड नोबेल की स्मृति में अर्थशास्त्र विज्ञान के लिए प्रदान किया जाने वाला सवेरिजेस रिक्सबैंक पुरस्कार 70 वर्षीय ब्रिटिश मूल के अमरीकी अर्थशास्त्री प्रोफेसर एंगस डीटॉन, अर्थशास्त्र विभाग, प्रिंसटन विश्वविद्यालय, प्रिंसटन, एन.जे., यूएसए0, को उनके उत्कृष्ट कार्य "फॉर हिज एनालिसिस ऑफ कन्जम्पशन, पॉवर्टी, एण्ड वेल्फेयर" (खपत, गरीबी और कल्याण के विश्लेषण पर) को चुना गया। नोबेल समिति के मुताबिक डीटॉन ने जो काम किया है, वह मुख्य रूप से तीन सवालों के आस-पास घूमता है। कैसे उपभोक्ता विभिन्न सामानों के बीच अपने खर्च को बांटता है? समाज की कितनी आय खर्च की जाती है? कितनी बचाई जाती है? भलाई व गरीबी को नापने और विश्लेषण का सर्वश्रेष्ठ उपाय क्या है? विकासशील देशों में जीवन स्तर और गरीबी मापने के लिए उन्होंने घरेलू खपत के आंकड़ों का भी प्रयोग किया है।

संदर्भ

1. हिन्दी दैनिक समाचार पत्र, अक्टूबर 2015, लखनऊ।
2. www.nobelprize.org